रात्रिक्लास 13/5/68 ओमशान्ति "स्वर्ग़ की बादशाही याद है?"

बच्चों को कोई ने बहलाया। बहलाने वाले तो बहुत ही बैठे हैं। रत्न है, बृजशान्ता है, मोहनी, प्रेम है। कम से कम बेहद की बाप की बैठ महिमा तो करनी है। बाबा बाबा ही याद है बच्चों को; क्योंकि कहेंगे भी ऐसे कि रूह को रूहानी बाप बहलाते हैं। कैसे बहलाते हैं? अच्छे में अच्छा बहलाने वाला है ही यह मीठे–2 बच्चों ; क्योंकि यह तो तुम एक ही बार सुनते हो। बाप कहते हैं मीठे–2 रूहानी बच्चों अभी अंत मते सा(सो) ...गते। अगर मुझे याद करते रहेंगे, कहां करेंगे ? बाप तो रहते परमधाम में है। वह श्रीमत देते हैं। गाया जाता है बाप की श्रीमत .... सद्गति के लिए सबसे न्यारी ...। यह सभी जानते हैं। उनका . ..... तुमरी गत मत तुम्हीं जानो। दूसरा कोई नहीं जानते। हैं भी ऐसे। ठीक कहते हैं। अभी तुमरी गत मत तुम्ही जानो सो जब आवे तब सुनावे। शिवजयन्ति मनाई जाती है। तो ज़रूर आते हैं ना। श्रीमत आकर देते हैं। उससे ही गति–सद्गति होती है। है बहुत सहज। बाप कहते हैं मैं ही तुमको ज्ञान देना जानता हूँ। श्रीमत जो मिलती है तो उनको याद करना चाहिए ना। बाप कहते हैं मुझे याद करो। मेरे पास आने लायक बनने लिए याद करो तो अंत मते सो गति। सब मेरे पास आवेंगे। एसे कोई साधु–संत नहीं कहेंगे। साधु–संत कह न सके कि तुम मेरे पास आ जावेंगे। यह बाप ही बतलाते हैं। सिकीलधे बच्चों। जानते हैं मैं इन मीठे–2 बच्चों को नयनों पर बिठाकर घर ले जाता हूँ। नूर सबको प्यारा होता है ना। कसम भी उठाते हैं नूर का। नूर के सिवाय जैसे कि कुछ है नहीं। इस समय हमको इन नयनों से काम नहीं लेना है। बाबा ने दूसरा नयन दिया है। इन नयनों शरीर आदि को भूल जाते हैं। यह कोई डिफीकल्ट नहीं है। आत्मा कहती है शरीर द्वारा यह विनाश होना है। कहते तो सभी हैं ना कि विनाश होगा; परन्तु नई दुनियां का किसको भी पता नहीं है। तुम इंतज़ार में हो नई दुनियां के लिए। बाप को याद करते हो तो पाप कट जाये। तो तुम स्वर्ग़ में जावेंगे। स्वर्ग़ तुम्हारे सामने हैं। तुम जल्दी जाना नहीं चाहते हो। इम्तहान से पहले जल्दी जावेंगे तो फेल हो जावेंगे। स्वर्ग़ तो बहुत ही मीठा है; परन्तु जावेंगे वही जो इम्तहान पास करते और लायक बने। लायक तब बनते हैं जब बाप की याद में रह शरीर को भूल जाते हैं। उस(तब) कर्मातीत अवस्था होती है। बाकी ऐसे नहीं चाहेंगे कि हम जल्दी स्वर्ग़ में जावें। यह उल्टी कामना है। अभी यहां कर्मभोग है; परन्तु हम जल्दी क्यों जावें। हम डिग्री कम क्यों करें। हम बाप के साथ क्यों न जावें। बच्चे कहेंगे जब तक बाप है तो बाबा के छाया के नीचे रहें। तुम सभी बाबा के छाया (के) नीचे हो। यह छाया बाप की है सभी से ऊँची। वहां होंगे देवताओं के(की) छाया में। वह है मनुष्यों की छाया। यह है ईश्वरीय छाया। यह तो जानते हो हम शरीर छोड़ जाकर नश(नया) लेंगे। गोल्डेन स्पून इन माऊथ। अभी तो कर्मातीत अवस्था ही नहीं हुई है। हम अभी थोड़े ही कहेंगे कि जावें। तुम समझते हो अभी हम ईश्वरीय परिवार में बैठे हैं। वह है कलियुगी

आसुरी परिवार। उनके छाया नीचे बैठे हैं। तुम तो पुरुषोत्तम संगमयुगी ईश्वरीय परिवार ईश्वरीय छाया के नीचे बैठे हो। एक को ही याद करते हैं। वही सभी का बेड़ा पार करते हैं। यह छाया सभी से अच्छी है। इतना पक्का निश्चय चाहिए। वह है दैवी छाया। उनसे भी यह ब्राह्मणों की छाया अच्छी; इसलिए यहां सभी आते हैं; परन्तु ऐसे तो नहीं सभी यहां आकर रहेंगे। भल मकान आदि बनाते हैं; परन्तु बुद्धि में है यह तो सभी टूट–फूट जानी है। आगरे में राधास्वामी का मकान अभी तक बनता रहता है। गवर्मेन्ट पास पैसे हैं तो केनाल्स डैमस आदि बहुत मनाते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो 8–9 वर्ष में तो सभी खलास हो जानी है। नये–2 इन्वेन्शन बाहर से भारतवासी सीख रहे हूँ(हैं)। वह फिर भी वहां आवेंगे तो सही ना। तुम्हारा पैगाम तो सभी को मिलता रहेगा। फिर कहेंगे अहो प्रभु तेरी लीला। ऐसे नहीं कि अहो प्रभु तेरी माया। प्रजा भी थोड़ा बहुत समझकर तो जाते हैं ना 84 जन्मों के चक्र को। बच्चों ने जैसे कल्प पहले सर्विस की है करते रहते हैं। माथा मारते रहते हैं। और–2 भाषाओं वाले भी आते रहते हैं। जितना–2 तुम

घुसते जाते हो निमन्त्रण मिलती जाती है। कोई तो इशारा से ही समझ जाते हैं। तुमने शुरू में इशारा से ही समझा। और अभी सर्विस में लगे हुये हो। वास्तव में सारा ज्ञान है इशारे में। स्थापना–विनाश–पालना। यह तो बिल्कुल कॉमन बात है। समझेंगे विनाश होता है तो ज़रूर स्थापना भी होनी है। आनंदमई माँ भी कहती है भगवान ज़रूर कोई सा. रूप में होना चाहिए। अभी तुम्हारी बुद्धि में है जो पहले आते हैं उन्होंने ही 84 जन्म लिये हैं। बाप भी कहते हैं मैं उनके बहुत जन्मों के अंत के भी अंत में प्रवेश करता हूँ। यह है नया ईश्वरीय जन्म। तुम कितने अकलमंद बनते हो। यह ल.ना. भी इस नॉलेज से बने हैं ना। इस नॉलेज से यह पद पाया। फिर उनको नॉलेज की दरकार ही नहीं। तुम ब्राह्मणों बिगर यह नॉलेज कोई में हो न सके। तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्रह्मा मुखवंशावली। तुम ब्राह्मणों को भी समझा सकते हो। अजमेर में ब्राह्मण लोग बहुत मिलते हैं। वहां रहते भी ब्राह्मण हैं। आजकल छोटे–2 बच्चों को शौक होता है। सयाणे बच्चे जो हैं समझते हैं टाइम ही थोड़ा है। तो हम क्यों नहीं बाकी समय याद की यात्रा में देते रहें। यह नॉलेज बेहद का बाप पढ़ाते हैं। क्यों नहीं हम यह पढ़ें ? सयाणे बच्चे किसको भी अच्छी रीत समझा सकते हैं। हम ब्रह्मा मुखवंशावली पवित्र बनते हैं। हमारी आत्मा बाप की याद से शुद्ध हो जाती है। पवित्र बन पवित्र दुनियां में जाते हैं। पवित्र दुनियां स्वर्ग़ को कहा जाता है। बाप कहते हैं सिर्फ़ मुझे याद करने से तुम पावन बन जावेंगे। तुम्हारे पास योग का बल होगा तो कोई को तीर लगेगा। बाप समझाते हैं बच्चे आत्माएं इन ऑरगन्स द्वारा पढ़ रहे हो। हर 5000वर्ष बाद आते हैं पढ़ने। कल्प पहले जो बच्चे आये थे वही आवेंगे पढ़ने। जो ब्राह्मण बनते हैं वही फिर सो देवता बनेंगे। अच्छा मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते किसने किया? ज़रूर बाप ही कहेंगे ना; क्योंकि जानते हैं बच्चे मेरे से भी ऊँच है। मैं तो सिर्फ़ ब्रह्माण्ड का ही मालिक हूँ। बच्चे तो विश्व के भी तो ब्रह्माण्ड के भी मालिक बनते हैं। तो ऊँच को हमेशा नमस्ते किया जाता है ना। नमस्ते यह तो नहीं करेंगे। समझा। हाँ बाकी याद प्यार दोनों देते हैं। अच्छा, बच्चों से विदाई।